नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

संयुक्त राष्ट्र सुधार अब वैश्विक आवश्यकता

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार को लेकर भारत ने एक बार फिर दुनिया का ध्यान उस सच्चाई की ओर खींचा है, जिसे लंबे समय से नजरअंदाज किया जाता रहा है. भारत का आरोप है कि सुरक्षा परिषद सुधारों पर हुई हालिया बातचीत के दस्तावेज में सदस्य देशों की वास्तविक राय को दबाया गया और स्थायी व अस्थायी सदस्यता विस्तार के व्यापक समर्थन को कमजोर रूप में प्रस्तुत किया गया. यह केवल प्रक्रियागत विवाद नहीं, बल्कि उस वैश्विक संस्था की विश्वसनीयता का प्रश्न है, जो स्वयं को अंतरराष्ट्रीय शांति और संतुलन का सबसे बड़ा मंच बताती है.

मौजूदा दौर में संयुक्त राष्ट्र जिस स्वरूप में कार्य कर रहा है, वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की परिस्थितियों का प्रतिबिंब है, न कि 21वीं सदी की बदलती वैश्विक वास्तविकताओं का. सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य, अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस, आज भी वीटो शक्ति के आधार पर पूरी दुनिया की सामूहिक इच्छा को प्रभावित करते हैं. यह संरचना उस समय बनी थी जब एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अधिकांश देश या तो उपनिवेश थे या वैश्विक निर्णय प्रक्रिया से बाहर थे. लेकिन आज दुनिया बदल चुकी है, शक्ति संतुलन बदल चुका है और वैश्विक चुनौतियां भी पहले से कहीं अधिक जटिल हो गई हैं. यूक्रेन युद्ध, गाजा संघर्ष, सूडान की हिंसा, म्यांमार संकट और अफ्रीका के अनेक गृहयुद्ध इस बात के प्रमाण हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघर्ष रोकने और स्थायी समाधान निकालने में लगातार विफल रहा है. कई मामलों में सुरक्षा परिषद केवल महाशक्तियों के राजनीतिक हितों का अखाड़ा बनकर रह गई है. जहां एक स्थायी सदस्य के हित प्रभावित होते हैं, वहां वीटो का उपयोग कर पूरी प्रक्रिया रोक दी जाती है. परिणाम यह होता है कि लाखों लोगों की पीड़ा के बावजूद वैश्विक समुदाय केवल बयान जारी करता रह जाता है.

भारत लंबे समय से यह कहता आया है कि यदि संयुक्त राष्ट्र को प्रभावी और विश्वसनीय बनाना है तो सुरक्षा परिषद का लोकतांत्रिक पुनर्गठन अनिवार्य है. दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला लोकतांत्रिक देश, तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था, शांति अभियानों में सबसे बड़ा योगदानकर्ता और वैश्विक दक्षिण की मजबूत आवाज होने के बावजूद भारत आज भी सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से बाहर है. यही स्थिति जापान, जर्मनी, ब्राजील और अफ्रीका के कई देशों की भी है. इससे यह संदेश जाता है कि संयुक्त राष्ट्र की संरचना अभी भी पुरानी शक्ति राजनीति की कैद में है. भारत द्वारा उठाया गया मुद्दा केवल अपनी सदस्यता का नहीं, बल्कि प्रतिनिधित्व और पारदर्शिता का है. यदि अधिकांश सदस्य देश सुधार चाहते हैं, तो उनकी राय को दस्तावेजों और निर्णय प्रक्रिया में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होना चाहिए. बहुमत की इच्छा को तकनीकी शब्दों और कूटनीतिक भाषा में कमजोर करना सुधार प्रक्रिया को धीमा करने का प्रयास माना जाएगा.

अब समय आ गया है कि संयुक्त राष्ट्र स्वयं को बदले. यदि यह संस्था नई वैश्विक वास्तविकताओं के अनुरूप खुद को ढालने में विफल रहती है, तो इसकी प्रासंगिकता लगातार कम होती जाएगी. दुनिया को ऐसी सुरक्षा परिषद चाहिए जो कुछ देशों के हितों की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की आवाज बने.

महाकौशल की डायरी

अनुसूचित जाति आयोग अध्यक्ष के स्वागत से असहज क्यों हैं भाजपाई...

अविनाश दीक्षित

एक ओर भारतीय जनता पार्टी सामाजिक समीकरणों को साधने के साथ नए चेहरों को आगे बढ़ाने की रणनीति पर काम कर रहा है तो दूसरी ओर हाल ही में की गई इन नियुक्तियों को लेकर पार्टी के भीतर अंदरूनी असहजता और गुटीय खींचतान बढ़ती नजर आ रही है. इस आशय का नजारा तब दिखा जब नव नियुक्त अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष कैलाश जाटव जबलपुर पहुंचे. उनके स्वागत जुलूस में बड़ी संख्या में उनके समर्थक नजर आए, उनका पूरे शहर में अलग अलग जगह जोरदार स्वागत किया गया. स्वागत जुलूस को जिसने भी देखा उसने कहा कि ये गजब का शक्ति प्रदर्शन था, लेकिन उसी जुलूस में शहर भाजपा के कई बड़े नेता और जनप्रतिनिधियों ने दूरी बनाये रखी. इस सूरतेहाल ने राजनैतिक गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया. जिसके तहत कहा जा रहा कि यह महज संयोग नहीं है बल्कि भाजपा के स्थानीय स्तर पर उभरते नये शक्ति केंद्र का सूचक है. यह बात कई नेताओं की चिंता बढ़ाने वाली बात थी, क्योंकि आयोग अध्यक्ष बनने के बाद कैलाश जाटव की संगठन में पकड़ और प्रभाव दोनों बढ़ना लाजिमी है.

दरअसल अनुसूचित जाति वर्ग के लिये आरक्षित जबलपुर की पूर्व विधानसभा सीट लम्बे अर्से से कांग्रेस के कब्जे में है. जातिगत समीकरणों के चलते और कांग्रेस विधायक लखन घनघोरिया की क्षेत्र में गहरी पैठ होने के कारण सारी ताकत झोंकने के बावजूद भाजपा इस सीट के तिलस्म को तोड़ नहीं पा रही है. बतौर उम्मीदवार के रूप में पिछले विधानसभा चुनाव में इस सीट से डॉ. कैलाश जाटव के नाम चर्चा खूब हो रही थी. फिलहाल पार्टी के भीतर इस क्षेत्र से टिकट को लेकर कई दावेदार पहले से सक्रिय हैं. हालिया चर्चाओं पर गौर करें तो मौजूदा भाजपा नगर अध्यक्ष रत्नेश सोनकर का नाम भी शिद्दत से लिया जा रहा है. इसके अलावा प्रदेश के एक पूर्व मंत्री अपने पार्षद बेटे के लिये इस सीट में अपनी अलग बिसात बिछाने में लगे हुए हैं, ऐसे में किसी एक चेहरे का तेजी से उभरना दूसरे नेताओं के लिए असहज स्थिति पैदा करता नजर आ रहा है. फिलहाल डॉ. कैलाश जाटव के कार्यक्रम, जुलूस से दूरी बनाने के मामले में भाजपाई नेता चुप्पी साधे हुए हैं मगर राजनैतिक विशेषज्ञों के अनुसार वो समय दूर नहीं है जब जबलपुर भाजपा के भीतर पूर्व विधानसभा सीट में दावेदारों के बीच टिकट संग्राम और अधिक बढ़ जाएगा.

आम जिंदगियों पर भारी लालच की पोटरी.....

संजीवनी नाम ही ऐसा है जिसका मतलब ही है किसी को जीवन देना...इस नाम से अगर संजीवनी क्लीनिक खोले गए तो ये सोचकर की आम जनता अगर इलाज से ग्रसित होकर संजीवनी क्लीनिक आएगी और बेहतर से बेहतर उपचार पाकर स्वस्थ होकर यहां से जाएगी मगर बीते दिनों दमोह और जबलपुर जिले में स्थित संजीवनी क्लीनिक में 3 फर्जी डॉक्टरों के फर्जी डिग्रियों के जरिये संजीवनी क्लीनिक में पदस्थ डॉक्टरों के पकड़े जाने के बाद प्रदेश के साथ जबलपुर व अन्य जिलों की स्वास्थ्य सेवाओं पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगा दिया है. इस प्रकरण के सामने आने के बाद जांच अधिकारी बड़े रैकेट का भंडाफोड़ होने का संकेत दे रहे हैं. इस घटनाक्रम को लेकर महाकोशल सहित समूचे प्रदेश में हड़कंप मचा हुआ है. जानकारों के मुताबिक यह घोटाला स्वास्थ्य विभाग के बिना किसी अधिकारी की सांठ गांठ से भी संभव नहीं है, ऐसे में उन लोगों के खेमे में काफी दहशत व्याप्त है जिन्होंने फर्जी डॉक्टरों की कहीं न कहीं मदद की थी. जानकारी के अनुसार वर्तमान में प्रदेशभर के जिलों में करीब 750 संजीवनी क्लीनिक स्वीकृत हैं, जिनमें से 250 पद रिक्त हैं. इन रिक्त पदों को भरने के नाम पर जनता की जिंदगी को सीधे दांव पर लगा दिया गया. इसके साथ ही इस बड़े कांड से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की चयन व सत्यापन प्रक्रिया कटघरे में खड़ी हुई है. नियमों की बात की जाए तो कड़े भौतिक सत्यापन के बाद ही किसी को नौकरी मिलती है लेकिन इन फर्जी डॉक्टरों का डेढ़ साल तक नौकरी करना विभाग के अंदर बैठे अधिकारियों व बाबुओं की सांठगांठ कितनी मजबूत रही होगी काफी कुछ स्पष्ट कर रही है. सूत्रों के अनुसार मेडिकल की फर्जी डिग्रियां बेचने के गिरोह के सामने आने के बाद राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और स्वास्थ्य संचालनालय ने प्रदेश भर के सीएमएचओ को कड़े निर्देश जारी कर दिए हैं जिसके बाद सीएमएचओ जबलपुर डॉ. नवीन कोठारी ने दो टूक कहा है कि जबलपुर जिले के संजीवनी क्लीनिकों में पदस्थ डॉक्टरों की डिग्री व मेडिकल काउंसिल के रजिस्ट्रेशन का री-वेरिफिकेशन, प्रक्रिया की जांच और जल्द ही इसकी पूरी रिपोर्ट बनाकर भोपाल भेजी जाएगी. अभी तक आरोपियों ने जो पूछताछ के दौरान खुलासे किए हैं उससे तो साफ है कि पूरा फर्जी डिग्री रैकेट सुनियोजित तरीके से काम कर रहा था और भोपाल, ग्वालियर संभाग से रैकेट के तार जुड़े हुए हैं. पकड़ा गया गिरोह डॉक्टरों की कमी का फायदा उठाकर 2 लाख रुपये से लेकर 7 लाख रुपये तक की मोटी रकम वसूलता था और बदले में फर्जी मेडिकल डिग्रियां और कूट रचित रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट थमा देता था. खबर है कि पुलिस की रडार पर भोपाल, ग्वालियर के कई और संदिग्ध आ चुके हैं जो कि फर्जी दस्तावेजों को तैयार करने के सूत्रधार हैं. अब देखना होगा कि इस बड़े रैकेट में और कितने फर्जी डॉक्टर व इनसे जुड़े लोग सार्वजनिक होते हैं.

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

दुनिया को सचेत उपभोग की ओर प्रेरित करना

प्रताव राव जाधव

आज जब दुनिया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 मना रही है, मानवता एक निर्णायक सभ्यतागत मोड़ पर खड़ी है. वर्तमान में हम अभूतपूर्व तकनीकी और भौतिक प्रगति के युग में जी रहे हैं, फिर भी हम जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों, बढ़ते मानसिक तनाव, पर्यावरणीय क्षरण और जीवन जीने के अस्थिर तरीकों जैसी चुनौतियों का सामना भी कर रहे हैं. इनमें से कई संकटों के मूल में एक ही चुनौती नजर आती है- वस्तुओं का अनियंत्रित और बिना सोचे-समझे किया जाने वाला उपभोग.

प्राकृतिक संसाधनों के जरुरत से ज्यादा दोहन से लेकर डिजिटल उपयोगिता पर अत्यधिक निर्भरता और अस्थिर जीवनशैली तक, आज आधुनिक समाज संतुलन से लगातार दूर होता जा रहा है.और इसी संदर्भ में, योग न केवल एक प्राचीन स्वास्थ्य अभ्यास के रूप में, बल्कि एक जिम्मेदार जीवन जीने के लिए एक कालातीत रूपरेखा के रूप में उभर कर सामने आता है. योग मानवता को आत्म-नियमन, संयम और सचेत विकल्पों की ओर एक शक्तिशाली मार्ग प्रदान करता है.यह हमें सिखाता है कि हम अपने भीतर और अपने आस-पास की दुनिया के साथ सामंजस्य कैसे स्थापित करें.

> सच्चा कल्याण अकेले अस्तित्व में नहीं हो सकता.मानव स्वास्थ्य, सामुदायिक कल्याण और संपूर्ण ग्रह का स्वास्थ्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं.जलवायु परिवर्तन, जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों और पर्यावरण के क्षरण की चुनौतियों के लिए न केवल नीतिगत हस्तक्षेप, बल्कि व्यवहार में परिवर्तन भी जरुरी है. इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर, आइए हम अपनी प्रतिबद्धता को योग मैट से आगे बढ़ाएं. आइए हम योग को केवल दैनिक अभ्यास के रूप में ही नहीं, बल्कि जीवन शैली के रूप में अपनाएं. एक ऐसी जीवन शैली जो सचेत उपभोग, आंतरिक अनुशासन और पारिस्थितिक जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करती है. आइए हम प्रधानमंत्री के सचेत जीवन जीने के आह्वान पर काम करें और एक ऐसे भविष्य का निर्माण करें, जहां तरक्की और विकास को केवल हमारे उपभोग से नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी से जीने के तरीके से मापा जाए. अपने आंतरिक वातावरण को बदलकर, हम सब मिलकर अपने ग्रह के बाहरी वातावरण को ठीक कर सकते हैं.

अत्यधिक उपभोग की वैश्विक चुनौती से निपटने के लिए, हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व ने मिशनलाइफ (लाइफ़स्टाइल फ़ॉर एनवायरनमेंट) के जरिए एक सशक्त दिशा प्रदान की है. प्रधानमंत्री ने एक ऐसे सिद्धांत को सामने रखा, जो योग के दर्शन से गहराई के साथ जुड़ा है-आज जरूरत है सचेत और सोच-समझकर उपयोग करने की, न कि बिना सोचे-समझे और विनाशकारी तरीके से उपभोग करने की. हाल ही में, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और आपूर्ति-श्रृंखला में आई बाधाओं के बीच, प्रधानमंत्री ने इस अपील का विस्तार करते हुए इसे एक दैनिक नागरिक जिम्मेदारी का रूप दिया.उन्होंने नागरिकों को प्रोत्साहित किया कि वे जान-बूझकर ऐसे उपभोग को सीमित करें, जिनसे बचा जा सकता है, जैसे ईंधन बचाना, अनावश्यक ऊर्जा का उपयोग कम करना, और गैर-ज़रूरी खर्चों पर दोबारा विचार करना.यह अपील किसी चीज की कमी या अभाव पर आधारित नहीं है,बल्कि, यह सामूहिक सशक्तिकरण, निरंतरता और राष्ट्रीय जिम्मेदारी के लिए एक रणनीतिक और नैतिक आह्वान है. जैसा कि उन्होंने हमें याद दिलाया-हर छोटा-बड़ा प्रयास मायने रखता है,ठीक वैसे ही जैसे हर एक बूंद से घड़ा भरता है.ये विचार योग के बुनियादी सिद्धांतों से गहराई से जुड़े हुए हैं.योग दर्शन अपरिग्रह-यानी अनावश्यक चीजों को जमा करने से बचना और संतोष यानी अपनी असली जरूरतों से संतुष्ट रहना, की बात करता है.ये सिद्धांत मिलकर एक ऐसी सोच पैदा करते हैं, जो लोगों को अंधाधुंध उपभोग से दूर सचेत जीवन की ओर प्रेरित करती है. योग हमें निष्क्रिय उपभोक्ता से बदलकर इस धरती का जिम्मेदार रखवाला बनाता है.

पृथ्वी पर इंसानी जरूरतों को पूरा करने के लिए तो काफी संसाधन हैं, लेकिन इंसान की असीमित लालच को पूरा करने के लिए नहीं.योग प्रकृति के साथ हमारे आपसी जुड़ाव की भावना को गहरा करके इस जागरूकता को फिर से जगाने में मदद करता है.जिस हवा में हम सांस लेते हैं, जो भोजन हम करते हैंऔर जिस स्थिरता की हम तलाश करते हैं, ये सभी एक साझा पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं. योग का अभ्यास धीरे-धीरे हमारे व्यवहार को भीतर से बदल देता है.यह मन की बेचैनी को शांत करता है, जल्दबाजी वाली आदतों को कम करता हैऔर आत्म-अनुशासन को मजबूत बनाता है.आज की दुनिया, जो पल भर के सुख और अत्यधिक उपभोगवाद से संचालित होती है, उसमें योग वह आंतरिक स्पष्टता पैदा करता है, जिसकी जरूरत हमें अपनी असली जरूरतों और कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं के बीच फर्क समझने के लिए होती है. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण तथा आयुष, दोनों मंत्रालयों से जुड़े मंत्री के तौर पर, मैं हर दिन यह देखता हूँ कि योग किस तरह गैर-संक्रामक रोगों (एनसीडी) के खिलाफ एक निवारक सार्वजनिक स्वास्थ्य साधन के रूप में काम करता है.

(लेखक आयुष मंत्रालय में केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री हैं.)

विधायकों को बंधक रखने पर रोक

चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र सहित 6 राज्यों में विधानपरिषद चुनाव के लिए आचारसंहिता लागू की है. इसमें एक महत्वपूर्ण निर्देश दिया गया है कि इस चुनाव में मतदाताओं को होटल, रिसॉर्ट जैसे स्थानों में ले जाकर रखना रिश्वत देने जैसा गंभीर अपराध माना जाएगा और ऐसे मामले में भारतीय दंड संहिता की धारा 171 ब के अनुसार कार्रवाई की जाएगी. यह देखा गया है कि किसी राज्य में राजनीतिक अस्थिरता पैदा होने पर पार्टी के विधायक, सांसद फूटकर दूसरी पार्टी में न चले जाएं इसलिए उन्हें किसी फाइव स्टार होटल या रिसॉर्ट में ले जाकर ठहरा दिया जाता है. सबसे पहले आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री एनटी रामाराव को 1984 में जब अंदेशा हुआ कि उनकी सरकार गिराई जा सकती है तो उन्होंने अपनी तेलुगू देशम पार्टी के विधायकों को कर्नाटक के रिसॉर्ट में भेज दिया था. महाराष्ट्र में 2019 में जब महाविकास आघाडी सरकार बन रही थी तब विधायकों को मुंबई के फाइवस्टार होटलों में रखा गया था. 2022 में जब एकनाथ शिंदे ने शिवसेना में बगावत की थी तब उनके गुट के विधायकों को बीजेपी शासित राज्यों के गुवाहाटी, सूरत व गोवा जैसे स्थानों में ले जाकर पूरी सुविधाओं के साथ आलीशान तरीके से रखा गया था. उनका फोन जब्त कर लेने और बाहर पहरा बिठा देने से उनकी हालत किसी बंधक जैसी हो जाती है. वह अपने परिवार से भी संपर्क नहीं कर पाते. उनका कोई व्यक्तिगत निर्णय या रुझान नहीं रह जाता. नेताओं का उद्देश्य अपनी पार्टी के विधायकों को संभालकर रखना होता है. विधानपरिषद चुनाव में भी क्रॉसवोटिंग के मामले सामने आते हैं. संदेह है कि इसमें मोटी रकम का खेल होता है. देखना होगा कि चुनाव आयोग के नए नियम का कितना असर होता है.

सबसे पहले आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री एनटी रामाराव को 1984 में जब अंदेशा हुआ कि उनकी सरकार गिराई जा सकती है तो उन्होंने अपनी तेलुगू देशम पार्टी के विधायकों को कर्नाटक के रिसॉर्ट में भेज दिया था. महाराष्ट्र में 2019 में जब महाविकास आघाडी सरकार बन रही थी तब विधायकों को मुंबई के फाइवस्टार होटलों में रखा गया था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पेट्रोल रहित विमानों की उड़ान वैज्ञानिक दें इस ओर ध्यान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, विमानों का ईंधन एयर टर्बाइन फ्यूल या एटीएफ कहलाता है. यह पेट्रोल का शुद्ध और अति ज्वलनशील रूप होता है. आप विमान यात्रा करते समय सोच भी नहीं सकते कि नीचे उसकी विशाल टंकी में भीषण आग धधक रही है. ईंधन महंगा होने से एयरलाइंस ने अपनी उड़ानों में काफी कटौती कर दी है. ऐसे में क्या होगा?'

हमने कहा, 'आप पुरानी हिंदी फिल्मों के कुछ गीत सुनिए और आंख मूंदकर कल्पना कीजिए कि विमान में सवार हैं. एक गीत है- उड़नखटोले पे उड़ जाऊं, मैं तेरे हाथ ना आऊं ! एक अन्य गाना है- मेरा पैगाम ले जा, दिल का सलाम ले जा, उल्फत का जाम ले जा उड़नखटोलेवाले राही!' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जब हमने चंद्रयान और मंगलयान भेजे, अंतरिक्ष में उपग्रह भेजे तो क्या ईंधन नहीं लगा होगा? तब तो सरकार ने इसरो के सामने ईंधन की कमी का रोना नहीं रोया.' हमने कहा, 'वह एक अलग तकनीक है. उसमें परंपरागत पेट्रोल, डीजल का उपयोग नहीं होता. स्पेस साइंस पढ़ेंगे तो जानकारी मिलेगी. पढ़ने की फुरसत नहीं है तो अंतरिक्ष यात्री

शुभांशु शुक्ला से पूछिए!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जब फॉसिल फ्यूल या क्रूड ऑयल नहीं खोजा गया था तब किसी ने सोचा नहीं होगा कि हवाई जहाज का ईजाद होगा और लोग एयर ट्रैवल करेंगे.'

हमने कहा, 'ऐसा नहीं है. प्राचीन भारत में भी हवाई यात्रा हुआ करती थी. धन के देवता कुबेर के पास पुष्पक विमान था जिसे उसके सौतेले भाई रावण ने छीन लिया था. कुबेर की अलकापुरी से वह विमान लंका लाया गया. रावण लंका से कैलाश पर्वत तक शिवजी का दर्शन करने उसी विमान से जाता था. रावण के मरने के बाद राम, सीता, लक्ष्मण को अयोध्या लौटना था तो विभीषण ने पुष्पक विमान उपलब्ध कराया. वह आज के बोइंग 787 या मालवाही सी-130 हर्कुलिस विमान से भी बहुत विशाल था. उसमें हनुमान, अंगद, विभीषण और पूरी वानर सेना सवार हो गई थी. मन की शक्ति से चलने वाले पुष्पक विमान में कितने भी यात्री बैठ जाएं, एक सीट खाली बचती थी. यह लंका से अयोध्या तक की सीधी नॉनस्टाप फ्लाइट थी. इसी तरह राम-रावण युद्ध में देवता विमानों से पुष्पवर्षा करते थे. जब श्रीकृष्ण पांडवों से मिलने हस्तिनापुर गए थे तब द्वारकापुरी पर मौका पाकर शाल्व ने हवाई हमला कर दिया था. इससे भारी तबाही हुई थी. श्रीकृष्ण ने लौटने के बाद शाल्व का संहार कर दिया था.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12265

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	■	5		6
7				■		■	
	■		■	8	■	9	
10	11		■	12	13		
■		■	14				■
15		■	16			■	17
18		19		■	■	20	
	■	21					

बाएं से दाएं

1. आकाश, स्वर्ग 5. यात्रा, परदेश में रहना (सं.) 7. बलपूर्वक (उर्दू) 9. उद्यान, वाटिका, लगाम 10. सांप की मादा 12. अनुचित बात पर अड़े रहना, दुराग्रह 14. अनुरक्त होना 15. कमरे का वह स्थान जहां दो दीवारें मिलती हों 16. नहाना 18. जांच या परीक्षा करना 20. महीना, मास 21. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का नाम

ऊपर से नीचे

1. परखना, परीक्षा लेना 2. समस्त, कुल, सारा 3. अफीम का सत्त (अं.) 4. ईसाई साध्वी (अं.) 5. सवाल, पूछी जाने वाली बात 6. जोश, उमंग, उत्साह 8. हवा में लहराना 9. बाधा डालना 11. गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत जहां जैनियों का तीर्थस्थान है 13. छल करना, धोखा देकर माल लूटना 14. पोशाक, पहनने के मुख्य कपड़े, पहनने का ढंग या रीति 15. गुस्सा होना, कुपित होना 17. प्रासाद 19. खाने योग्य, खाद्य 20. फूलों का हार, लड़ी

Solution 12264

आ	क्रा	म	क	■	पु	स्त	क
गं	■	हा	ल	चा	ल	■	स
तु	ला	■	श	श	कं	■	म
क	■	मि	■	नी	■	ब	■
■	क	ला	ई	■	क	ह	ना
स	मी	प	■	ग	र	ल	■
रो	ना	■	गु	म	■	ना	ली
ज	■	द	र	क	ना	■	ख

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है, व्यय में कमी होगी, व्यवसाय में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम के उपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्यय होगा, वर्षके अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को परिश्रम के उपरांत लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पडेगा, पर लाभ कम होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक लाभ होगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को सहयोगरहेगा, मकर और कुंभ राशि की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अच्छे लाभ का योग है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, ईमानदार, व्यवहार कुशल, धैर्यवान होगा, शिक्षा अच्छी रहेगी, ये परोपकारी, एवं प्रेरक होगा, भाई के साथ कार्यो में सदैव तत्पर रहेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

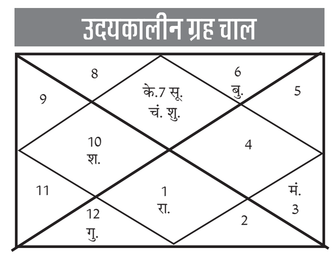

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी भृगुवासरे दिन 11/46, पुष्य नक्षत्रे दिन 8/12, वृद्धि योगे दिन 1/38, तैतिल करणे सू.उ. 5/20, सू.अ. 6/40, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से सींगदाना, काली, उड़द, तिल, तेल, सरसों, लोहा, शेयर के भाव में तेजी होगी, गुड, खांड, धनु, निकिल, कॉपर, के भाव में घटा-बढी, होगी. भाग्यांक 2188 है.

मेष- बातचीत में नरमी बरतें, अनुभव की कमी से काम अटक सकते हैं, रचनात्मक कार्यो में प्रगति होगी, संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेगा.

वृषभ- पारिवारिक आयोजन में भागीदारी बढेगी, माता पिता के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, रचनात्मक कार्यो में प्रगति होगी, संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेगा.

मिथुन- समस्याओं को निपटाने में सफल होंगे, भावनाओं में बहकर गलत सौदा कर सकते हैं, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, अनावश्यक विवादों को टालें.

कर्क- सोच समझकर पूँजी निवेश करें, धार्मिक कार्यो में भागीदारी बढेगी, मातृपक्ष की चिन्ता रहेगी, सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी.

सिंह- अटके कार्य सुलझा लेंगे, नए अवसर मिलने से उत्साह बढ़ेगा, नवीन वस्त्राभूषण उपहार की प्राप्ति होगी, निजी कार्यो में रूचि रहेगी.

कन्या- काम को वक्त पर पूरा करने का प्रयत्न करें, लंबी दूरी की यात्रा हो सकती है, स्वास्थ्य की अनुकूलता रहेगी, प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी.

तुला- लाभ के अच्छे अवसर हाथ में आसकते हैं, दौड़धूप अधिक करना पडेगी, अनावश्यक कार्यो में संयम रखें, शत्रु की गतिविधियों पर ध्यान दें.

वृश्चिक- जरूरतमंदों की मदद करके खुश होंगे, आय के नए श्रोत बनने से धन कोष में वृद्धि होगी, नए मैत्री संपर्क स्थापित होंगे, आर्थिक संसाधनों का उदय होगा.

धनु- लाभ के अवसर मिलेंगे, सूझबूझ कर आगे बढ़े, उलझनें दूर होंगी, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, नौकरी में कार्याधिक्त रहेगा.

मकर- सोच समझकर पूँजी निवेश करें, धार्मिक कार्यो में भागीदारी से मन में संतोष रहेगा, व्ययभार अधिक होगा, अतिथि आगमन का योग है.

कुम्भ- अनुभवी लोगों की मदद से विवाद सुलझ जायेंगे, तनाव दूर होगा, कार्य की अधिकता से मानसिक चिन्ता रहेगी, आलस्य बना रहेगा.

मीन- नए काम की शुरूआत में बाधा आ सकती है, गलत व्यक्तियों का साथ नुकसान देगा, इच्छित कार्य में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा.

SUDOKU 7397

				1			6	
					5			
2		3	9			8		
6							5	
			8		3			
	1							4
		7			1	3		9
			2					
	5			6				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7396

7	6	8	2	1	9	3	4	5
2	1	5	6	3	4	8	7	9
3	4	9	5	7	8	6	1	2
5	7	4	8	6	1	9	2	3
9	2	1	3	4	5	7	8	6
8	3	6	7	9	2	1	5	4
1	5	3	4	8	5	2	9	7
4	9	7	1	2	3	5	6	8
6	8	2	9	5	7	4	3	1